University in News on 18 October 2024

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

जीवों के व्यवहार में परिवर्तन को समझने के लिए डाटा की जरूरत : प्रो. टॉम ट्रेगेंजा

लखनऊ। किसी भी जीव की संरचना और व्यवहार में परिवर्तन को समझने के लिए बड़े डाटा सेट की जरूरत होती है। यह बात यूनिवर्सिटी ऑफ एक्सेटर यूके के प्रो. टॉम ट्रेगेंजा ने आम चहकने वाले झींगुरों पर किए गए अपने 20 वर्षों के अध्ययन डाटा पर चर्चा के दौरान कही। वह लखनऊ विवि के जंतुविज्ञान विभाग में आयोजित भारतीय विकासवादी जीव विज्ञानी समाज के पांचवें वार्षिक सम्मेलन में बोल रहे थे।

लविवि के जंतु विज्ञान विभाग में पांचवां वार्षिक सम्मेलन

पहले दिन कार्यक्रम में 13 व्याख्यान हुए। इसमें अलग-अलग विषयों के विशेषज्ञों ने विचार व्यक्त किए। आईआईएसईआर कोलकाता की डॉ. अनिंदिता भद्रा ने आवारा कुत्तों के परिवारों और उनके आपस में सहयोग करने के तरीके के बारे में बात की। उन्होंने इन संबंधों को आकार देने में मानवीय अंतःक्रियाओं के प्रभाव के बारे में बात की। डॉ. अमित त्रिपाठी ने मोनोजीनियन नामक मछली परजीवी कृमियों पर अपना डाटा प्रस्तुत किया।

उन्होंने बताया, कृमि मछली मत्स्य उद्योग के लिए गंभीर खतरा है। कार्यक्रम में प्रो. एचए रंगनाथ, डॉ. कृष्णमेघ कुंटे, डॉ. एनजी प्रसाद, डॉ. यशराज चव्हाण ने भी अपने कार्य से छात्र-छात्राओं का परिचित करवाया। कार्यक्रम की संयोजक प्रो. गीतांजलि मिश्रा रहीं। इसमें देशभर से दो सौ से अधिक प्रतिभागी शामिल हुए। (संवाद)

टेलीस्कोप से देखा सुपर मून

लविवि में टेलीस्कोप से सुपर मून का नजारा देखते लोग। संवाद

लखनऊ। लखनऊ विवि में बृहस्पतिवार को शरद पूर्णिमा पर शिक्षकों व विद्यार्थियों ने टेलीस्कोप के जरिए सुपर मून देखा। यह इस साल का तीसरा सुपर मून था। इंदिरागांधी नक्षत्रशाला की ओर से लविवि के ज्योतिर्विज्ञान विभाग और सूर्य व चंद्र दर्शन के लिए टेलीस्कोप की व्यवस्था की गई थी। छात्रों ने सूर्य-चंद्र की गतिविधियों को समझा। अमेच्योर एस्ट्रोनॉमर्स क्लब की फाउंडर डॉ. अलका मिश्रा ने बताया कि सुपर मून शब्दावली का उपयोग अंग्रेज खगोलशास्त्री रिचर्ड नोले ने किया था। इस दिन चंद्रमा अपने मूल आकार से 14 प्रतिशत बड़ा और 30 प्रतिशत अधिक चमकीला नजर आता है। रात में चांद 11:55 पर पृथ्वी के सबसे करीब 35,1519 किलोमीटर पर मौजूद रहा। विद्यार्थियों के साथ ही डॉ. राजेश्वर, डॉ. विपिन, प्रो. मनोज मिश्रा, प्रो. सत्यकेतु, अनिल यादव, डॉ. धीरेंद्र कुमार, डॉ. अनुज शुक्ला, डॉ. अनिल पोरवाल आदि मौजूद रहे। (संवाद)

JAGRAN CITY PAGE III

एक ही समिति करेगी जेआरएफ, जेआरए का चयन

जासं ● लखनऊ : लविवि ने विभागों में संचालित विभिन्न शोध परियोजनाओं में पोस्ट डाक्टरल फेलो (पीडीएफ), जूनियर रिसर्च फेलो, जूनियर रिसर्च असिस्टेंट (जेआरए), फील्ड असिस्टेंट से लेकर डाटा एंट्री आपरेटर आदि के चयन के लिए बदलाव कर दिया है। कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने चयन समिति का गठन कर दिया है। विभागों के प्रधान अन्वेषकों को इस कमेटी से पहले अनुमति लेनी होगी। फिर लविवि की वेबसाइट पर पदों को विज्ञापित करना होगा। कुलपति के आदेश पर कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी ने नोटिफिकेशन जारी किया।

दरअसल, अभी तक लविवि के हर विभाग अपने-अपने स्तर से शोध परियोजनाओं आदि में जूनियर रिसर्च फेलो, पोस्ट डाक्टरल फेलो, जूनियर रिसर्च असिस्टेंट, फील्ड असिस्टेंट आदि का चयन करने के लिए कुलसचिव के माध्यम से कुलपति से अनुमति लेते हैं। फिर चयन प्रक्रिया के लिए अलग-अलग कमेटी बनाई जाती है। कुलसचिव विद्यानंद त्रिपाठी

> पोस्ट डाक्टरल फेलो, जूनियर रिसर्च फेलो, जूनियर रिसर्च असिस्टेंट और फील्ड असिस्टेंट आदि के चयन में एकरूपता और पारदर्शी व्यवस्था के लिए एक चयन समिति गठित की गई है। इससे छात्रवृत्ति में आने वाली समस्याएं भी खत्म होंगी।
> -प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति, लविवि

ने बताया कि चयन में एकरूपता व पारदर्शिता लाने के लिए कुलपति के आदेश पर एक चयन समिति बना दी गई है। इसमें अधिष्ठाता शोध, उप कुलसचिव (प्रोजेक्ट), संबंधित विभागाध्यक्ष व संबंधित प्रधान अन्वेषक परियोजना शामिल हैं।

वेबसाइट पर जारी करना होगा पदों का विवरण : सभी प्रधान अन्वेषकों को चयन प्रक्रिया के लिए संबंधित चयन समिति से अनुमति के बाद वेबसाइट पर पद विज्ञापित करने होंगे। आए हुए आवेदनों के आधार पर इसी समिति से चयन प्रक्रिया पूरी करानी होगी। फिर कुलपति से स्वीकृति, प्रशासनिक नियुक्ति पत्र प्राप्त कर अग्रिम कार्रवाई करनी होगी।

एमबीए में अब 30 तक आवेदन

जासं ● लखनऊ : लविवि ने नौकरी करने वालों व उद्यमियों के लिए इसी साल शुरू किए गए एग्जीक्यूटिव एमबीए पाठ्यक्रम की तिथि बढ़ा दी है। अब 30 अक्टूबर तक आनलाइन माध्यम से आवेदन किए जा सकेंगे। प्रवेश समन्वयक प्रो. अनित्य गौरव ने नोटिफिकेशन वेबसाइट पर जारी किया। प्रबंधन अध्ययन संकाय की अधिष्ठाता प्रो. संगीता साहू ने बताया कि शैक्षिक सत्र 2024-26 में पहली बार एजीक्यूटिव एमबीए पाठ्यक्रम शुरू हो रहा है। कोर्स विशेष रूप से कामकाजी पेशेवरों और उद्यमियों के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे वह अपने बिजनेस और करियर को आगे बढ़ा सकें। इस पाठ्यक्रम को चार मार्केटिंग, फाइनेंस, ह्यूमन रिसोर्स और इंटरनेशनल बिजनेस में किया जा सकता है। प्रवेश के लिए 30 सीटें हैं, जिन पर किसी भी वर्ग में स्नातक वाले ऐसे अभ्यर्थी, जिनके न्यूनतम 50 प्रतिशत अंक हैं, वे आवेदन कर सकते हैं। दो साल का कार्य अनुभव भी जरूरी है। इस पाठ्यक्रम के प्रति सेमेस्टर फीस 99,080 रुपये है।

'वैश्विक जलवायु परिवर्तन से विलुप्त हो सकते हैं झींगुर जैसे कीट'

जासं ● लखनऊ : लविवि के प्राणि शास्त्र विभाग की ओर से तीन दिवसीय इंडियन सोसाइटी आफ इवोल्यूशनरी बायोलाजिस्ट्स के पांचवें वार्षिक सम्मेलन की शुरुआत गुरुवार को हुई। एपी सेन हाल में भारत के विभिन्न हिस्सों से करीब 200 प्रतिभागी शामिल हुए।

कार्यक्रम में यूनिवर्सिटी आफ एक्सेटर यूके के प्रो. टाम ट्रेगेंजा ने रखे विचार ● लवि

यूनिवर्सिटी आफ एक्सेटर, यूके से प्रो. टाम ट्रेगेंजा ने आमतौर पर चहकने वाले झींगुर के एक समूह पर 20 वर्षों के अपने डेटा पर चर्चा की। उन्होंने दिखाया कि किसी भी जीव की संरचना और व्यवहार में परिवर्तन को समझने के लिए बड़े डेटा सेट की आवश्यकता होती है। बताया कि वैश्विक जलवायु परिवर्तन से झींगुर जैसे छोटे कीट विलुप्त हो सकते हैं। लविवि के प्राणि विज्ञान विभाग के डा. अमित त्रिपाठी ने दिखाया कि कैसे मोनोजीनियन परजीवी दुनिया भर में फैल गए और विकसित हुए। अब ये मछली उद्योग के लिए गंभीर खतरा हैं।

मार्मन कामन तितली के दुर्लभ रूप वताए : नेशनल सेंटर फार बायोलाजिकल साइंसेज, बेंगलुरु के डा. कृष्णमेघ कुंटे ने सुंदर कामन मार्मन तितली के बारे में बताया कि कैसे इस तितली में दुर्लभ रूप विकसित होते हैं। आइआइएसइआर की डा. अनिंदिता भद्रा ने आवारा कुत्तों के परिवारों और उनके आपस में सहयोग करने के तरीके के बारे में बात की।

HINDUSTAN PAGE 6

एलयू: ई-एमबीए पाठ्यक्रम केलिए अब 30 तक आवेदन

लखनऊ, संवाददाता। एलयू में नौकरीशुदा व्यक्तियों और उद्यमियों के लिए एग्जीक्यूटिव एमबीए पाठ्यक्रम की शुरुआत हो रही है। जिसके आवेदन की अंतिम तिथि बढ़ गई है। अब इच्छुक अभ्यर्थी 30 अक्तूबर तक आवेदन कर सकेंगे।

30 सीटें, प्रति सेमेस्टर फीस 99,080 रुपये तय

कुलपति प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि एलयू के प्रबंध अध्ययन संकाय के प्रबंध विभाग में शैक्षिक सत्र 2024-26 के लिए ई-एमबीए कार्यक्रम को आरंभ किया गया है। जिसे विवि की सभी विधायिका से मंजूरी प्रदान हो चुकी है। कुलपति के अनुसार अभी कुल 30 सीटों पर दाखिला लिया जाएगा। प्रवक्ता प्रो. दुर्गेश श्रीवास्तव के मुताबिक ई-एमबीए पाठ्यक्रम के लिए आवेदन शुल्क सामान्य, ईडबल्यूएस व ओबीसी वर्ग के लिए 1600 और एससी-एसटी व पीएच के लिए 800 रुपये तय किया गया है।

VOICE OF LUCKNOW PAGE 6

नैनो औषधियों के महत्व से कराया अवगत

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग ने गुरुवार को ग्यारहवें विशेष सामान्य व्याख्यान का आयोजन किया, जिसे प्रो. सर्ज मिग्नानी, यूनीकेन, सीईआरएमएन, कैन 14032 फ्रांस ने दिया। विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल मिश्रा ने दर्शकों को नैनो औषधियों के महत्व से अवगत कराया और बताया कि वे नई दवाओं के विकास में कैसे सहायक होंगी। प्रो. वीके शर्मा ने उनका स्वागत किया और उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया। डॉ. नीरज कुमार मिश्रा ने श्रोताओं से प्रो. मिग्नानी का परिचय कराया। प्रो. मिग्नानी ने इस विषय पर एक बहुत ही रोचक व्याख्यान दिया, जिसका शीर्षक था, ट्यूनेबल फॉस्फोरस डेंड्रिमर सतहें, नैनो औषधियो को अभिनव नैनोमेडिसिन के रूप में विकसित करने के लिएः अब हम कहां जाएं? नैनोमेडिसिन अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य नैनोकणों को दवा वितरण प्रणाली के रूप में या कैंसर जैसी बीमारियों से निपटने के लिए नैनो दवाओं के रूप में विकसित करना है, जो शारीरिक विकार के प्रमुख कारणों में से एक हैं। इस प्रस्तुति का फोकस व्यवस्थित कैंसर नैनोथेरेपी में इस गंभीर समस्या का सामना करने वाली वर्तमान मुख्य चुनौतियों और शेष मुद्दों को प्रस्तुत करना और उनका विश्लेषण करना था। प्रो. मिगनानी ने फिर कैंसर नैनोमेडिसिन के भविष्य पर चर्चा की और फिर कुछ नैनोकणों के बारे में विश्लेषण किया।

AMRIT VICHAR PAGE 4

कीट-पतंगे न हों तो खत्म हो जाएगी दुनिया

लखनऊ विश्वविद्यालय में शुरू हुई तीन दिवसीय कार्यशाला में देश-विदेश से आए जीव वैज्ञानिकों ने जताई चिंता

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : दुनिया से कीट-पतंगों की आबादी 50 फीसद से अधिक खत्म हो चुकी है। कई प्रजातियां विलुप्त होने की कगार पर हैं। कीट-पतंग खत्म हुए तो दुनिया अपने आप खत्म हो जाएगी, क्यों कीट हमारे जीवन चक्र का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये चिंताजनक जानकारी लखनऊ विश्वविद्यालय में शुरू हुए भारतीय विकासवादी जीवविज्ञानी समाज के 5वें वार्षिक सम्मेलन में इंग्लैंड, डेनमार्क और स्वीडन के वैज्ञानिकों ने दी।

लखनऊ विश्वविद्यालय में शुरू हुए 5वें सम्मेलन में देश-विदेश के 200 वैज्ञानिक शामिल होने आए हैं। कीट कैसे व्यवहार करते हैं, कैसे वंशवृद्धि करते हैं, कैसे संदेश देते हैं और समूह में क्यों रहते हैं, ऐसे विभिन्न विषयों पर तीन दिनों की कार्यशाला का

जलवायु परिवर्तन के कारण कीट-पतंगों की 50 फीसद आबादी हो चुकी है खत्म

आयोजन किया गया है। इसमें जीव वैज्ञानिकों ने मछलियां झुंड में क्यों रहती हैं, हाथी एक-दूसरे से संवाद कैसे करते हैं और मक्खियां कैसे अपना व्यवहार बदलती हैं, इन रोचक विषयों पर जानकारी दी।

कार्यशाला में शामिल हुए ब्रिटेन के जीव वैज्ञानिक प्रो. टॉम ट्रिगांजा ने तीन दशकों से झींगुरों की तीन से चार पीढ़ियों पर शोध कर चुके हैं। 20 से अधिक वर्षों से झींगुरों के निवास पर कैमरा लगाकर दिनरात उनकी निगरानी कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि दशकों में झींगुरों की आबादी घट रही है। 20 साल पहले झींगुरों की जो आवाज थी, वह बदल गई है। जलवायु परिवर्तन का खामियाजा उनको भी भुगतना पड़ रहा है।

अमित त्रिपाठी।

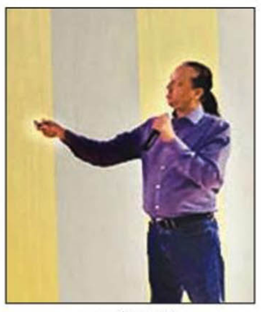

कृष्णमेघ कुंटे।

टॉम ट्रिगांजा।

खत्म हो रहे गौरैया, गिद्ध

मैसूर के जीव वैज्ञानिक डॉ मेवा सिंह ने बताया कि, गौरैया और गिद्ध के जीवन पर संकट है। गौरैया पेड़ों की बजाए घरों और मानव आबादी के आसपास रहना पसंद करती हैं। पहले हमारे घरों में गौरैया को घोसला बनाती थी, लेकिन नए जमाने के घरों में उनके घोसला बनाने की गुजांइश खत्म हो गई है। जिससे उनकी प्रजनन दर भी कम होती जा रही है। पर्यावरण का सफाई कर्मी कहे जाने वाला गिद्ध डाईक्लोफिनैल के कारण मर रहे हैं। इसका कारण जानवरों को खिलाई जाने वाली दर्द निवारक दवा है।

तितली, कुत्तों, मछली के बारे में दी जानकारी

यूनिवर्सिटी ऑफ़ मैसूर और सेंटर फ्रॉर ह्यूमन जेनेटिक्स बैंगलोर के प्रो. एचए रंगनाथ, आईआईएसईआर कोलकाता डॉ. अनिंदिता भद्रा ने आवारा कुत्तों के परिवारों और उनके आपस में सहयोग करने के तरीके के बारे में बात की। लखनऊ विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग के डॉ. अमित त्रिपाठी ने मोनोजीनियन नामक मछली परजीवी कृमियों पर विवरण प्रस्तुत किया। नेशनल सेंटर फॉर बायोलॉजिकल साइंसेज बैंगलोर के डॉ. कृष्णमेघ कुंटे ने मॉर्मन तितली के बारे में बताया। मोहाली के डॉ. एनजी प्रसाद के प्रतिरक्षा कार्य की अनुवांशिकता को समझने में खोज की जानकारी दी। डॉ. यशराज चव्हाण ने चर्चा की कि कैसे बहुकोशिकीय जीव एककोशिकीय जीवों से विकसित हुए होंगे। अभिषेक नायर, बोधिसत्व नंदी, देबर्पिता दास, शुभा गोविंदराजन, बनजा, भव्या ने भी जानकारी दी। कार्यक्रम की समन्वयक डॉ गीतांजली मिश्रा ने कहा कि कार्यक्रम युवा पीढ़ी को प्रेरित करेगा।

नैनो दवाएं बनेंगी कैंसर को रोकने में सहायक

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार: लविवि के रसायन विज्ञान विभाग में 11 वें विशेष सामान्य व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें फ्रांस से आए प्रो. सर्ज मिग्नानी ने व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि नैनोमेडिसिन अनुसंधान का उद्देश्य नैनोकणों को दवा के रूप में या कैंसर जैसी बीमारियों से निपटने के लिए नैनो दवाओं के रूप में विकसित करना है। विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल मिश्रा ने बताया कि नैनो औषधियां नई दवाओं के विकास में कैसे सहायक होंगी।

नैनोकणों का उपयोग करके प्री-क्लीनिकल और क्लिनिकल परीक्षणों के परिणाम उत्साहजनक हैं। नैनोसाइंस के इस उभरते क्षेत्र द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों की प्रचुरता के बारे में बहुत उत्साह है, खासकर ऑन्कोलॉजी में। कैंसर नैनोमेडिसिन के भविष्य पर चर्चा करते हुए कुछ नैनोकणों के बारे में विश्लेषण किया। कार्यक्रम में डॉ. मनीषा शुक्ला ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा। सीडीआरआई के कुछ वैज्ञानिकों के साथ-साथ विभाग के संकाय सदस्यों और शोध विद्वानों ने भी भाग लिया। प्रो. वीके शर्मा ने उनका स्वागत किया और उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया। डॉ. नीरज कुमार मिश्रा ने श्रोताओं से प्रो. मिग्नानी का परिचय कराया।

LOKSATYA PAGE 2, 3

कैंसर नैनोथेरेपी की चुनौतियों पर किया मंथन

रसायन विज्ञान विभाग में ग्यारहवां विशेष सामान्य व्याख्यान आयोजित

लखनऊ, लोकसत्य। रसायन विज्ञान विभाग ने 17 अक्टूबर, 2024 को ग्यारहवें विशेष सामान्य व्याख्यान का आयोजन किया, जिसे प्रो. सर्ज मिग्नानी, यूनीकेन, सीईआरएमएन, कैन 14032 फ्रांस ने दिया। विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल मिश्रा ने दर्शकों को नैनो औषधियो के महत्व से अवगत कराया और बताया कि वे नई दवाओं के विकास में कैसे सहायक होंगी। प्रो. वी के शर्मा ने उनका स्वागत किया और उन्हें स्मृति चिन्ह भेंट किया। डॉ. नीरज कुमार मिश्रा ने श्रोताओं से प्रो. मिग्नानी का परिचय कराया।

विज्ञान

- **एसजीपीजीआई के चिकित्सकों ने दिया प्रशिक्षण**

प्रो. मिग्नानी ने इस विषय पर एक बहुत ही रोचक व्याख्यान दिया, जिसका शीर्षक था, ट्यूनेबल फॉस्फोरस डेंड्रिमर सतहें, नैनो औषधियो को अभिनव नैनोमेडिसिन के रूप में विकसित करने के लिए: अब हम कहां जाएं? नैनोमेडिसिन अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य नैनोकणों को दवा वितरण प्रणाली के रूप में या कैंसर जैसी बीमारियों से निपटने के लिए नैनो दवाओं के रूप में विकसित करना है, जो शारीरिक विकार के प्रमुख कारणों में से एक हैं। उन्होंने उल्लेख किया कि नैनोकणों का उपयोग करके प्री-क्लीनिकल और क्लिनिकल परीक्षणों के परिणाम उत्साहजनक हैं, जो सुझाव देते हैं कि नैनोकण दवाओं के विशेष गुणों को डिजाइन करने और उन्हें बेहतर बनाने (नैनोकैरियर दृष्टिकोण) और नैनोडिवाइस को दवाओं के रूप में या नैनोकैरियर के रूप में विकसित करने के लिए मजबूत अवसर प्रदान करते हैं। अन्य प्रकार के उपचारों के साथ इस तरह के हस्तक्षेप संभव नहीं हैं और इस प्रकार नैनोसाइंस के इस उभरते क्षेत्र द्वारा प्रदान किए जाने वाले अवसरों की प्रचुरता के बारे में बहुत उत्साह है, खासकर ऑन्कोलॉजी में। इस प्रस्तुति का फोकस व्यवस्थित कैंसर नैनोथेरेपी में इस गंभीर समस्या का सामना करने वाली वर्तमान मुख्य चुनौतियों और शेष मुद्दों को प्रस्तुत करना और उनका विश्लेषण करना था। प्रो. मिगनानी ने फिर कैंसर नैनोमेडिसिन के भविष्य पर चर्चा की और फिर कुछ नैनोकणों के बारे में विश्लेषण किया।

शुरुआत में उन्होंने पहली श्रेणी के फॉस्फोरस मेटल-डेंड्रिमर्स और मेटल-डेंड्रन्स ($Cu(II)$ और $Au(III)$) पर चर्चा की, जिनमें अच्छे सुरक्षा अनुपात और कार्रवाई के मूल तंत्र जैसे प्रोपोप्टोटिक BAX एक्टिवेटर्स के साथ शक्तिशाली एंटीप्रोलिफेरेटिव गतिविधियाँ होती हैं।

एलयू के ज्योतिर्विज्ञान विभाग में सूर्य दर्शन एवं रालि आकाश दर्शन कार्यक्रम हुआ

सुपर मून वर्ष 2024 का सबसे निकटतम पूर्ण सुपरमून था

लखनऊ, लोकसत्य। बीते बुधवार को पूर्ण सुपर हंटर मून था और यह सुपर मून वर्ष 2024 का सबसे निकटतम पूर्ण सुपरमून था। दिनांक 17 अक्टूबर को इंदिरा गाँधी नक्षनशाला, लखनऊ द्वारा शरद पूर्णिमा के अवसर पर लखनऊ विश्वविद्यालय के ज्योतिर्विज्ञान विभाग में जन सामान्य हेतु सूर्य दर्शन एवं रालि आकाश दर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

यह कार्यक्रम पूर्णतयः निःशुल्क था। ज्योतिष की शरद पूर्णिमा खगोल विज्ञान के हिसाब से आज का चंद्रमा सुपर मून कहलाता है। इंदिरा गाँधी नक्षनशाला, लखनऊ द्वारा समय समय पर उत्तर प्रदेश में विभिन्न स्थानों पर खगोलीय घटनाओं को जनसामान्य हेतु आयोजित कराया जाता है। इसी क्रम में आज दिनांक 17 अक्टूबर 2024 को इंदिरा गाँधी नक्षत्रशाला,

लखनऊ द्वारा लखनऊ विश्वविद्यालय के ज्योतिर्विज्ञान विभाग, अभिनव गुप्त भवन में सूर्य दर्शन एवं रानि आकाश दर्शन कार्यक्रम का आयोजन कराया गया। इस अवसर पर इंदिरा गाँधी नक्षत्रशाला, लखनऊ द्वारा चार टेलिस्कोप स्थापित किये गए। यह कार्यक्रम इंदिरा गाँधी नक्षत्रशाला के उत्तर प्रदेश अमच्योर एस्ट्रोनॉमर्स क्लब द्वारा सम्पादित कराया गया। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश अमच्योर एस्ट्रोनॉमर्स क्लब की फाउंडर डॉ० अलका मिश्रा, एसोसिएट प्रोफेसर, लखनऊ विश्वविद्यालय, और अनिल यादव, भूतपूर्व निदेशक, विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी परिषद, उत्तर प्रदेश भी उपस्थित थे। लखनऊ विश्वविद्यालय से प्रोफेसर सत्यकेतु, प्रोफेसर विपिन पाण्डेय, डॉ अनिल कुमार पोरवाल, डॉ अनुज शुक्ल, डॉ विष्णुकान्त शुक्ल. डॉ प्रवीण बाजपेई, विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी परिषद्, उत्तर प्रदेश के निदेशक डॉ० धीरेन्द्र कुमार श्रीवास्तव एवं सचिव, शीलधर सिंह यादव, संयुक्त निदेशक, डॉ० राजेश कुमार गंगवार और विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विभाग, उत्तर प्रदेश के प्रमुख सचिव, पंधारी यादव ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढाई। विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी परिषद, उत्तर प्रदेश के वैज्ञानिक अधिकारी सुमित कुमार श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रम का सञ्चालन किया गया तथा कार्यक्रम के प्रतिभागियों को सूर्य एवं चंद्रमा के विषय में रोचक तथ्यों से अवगत कराया। कार्यक्रम में लखनऊ विश्विद्यालय के लगभग 500 विद्यार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। इसके अतिरिक्त बाहर के बहुत ज्यादा जनसामान्य द्वारा भी शरद पूर्णिमा के अवसर पर सुपर मून का अवलोकन किया गया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से आये हुए विद्वजनों ने टेलीस्कोप द्वारा सूर्य व चंद्र का आकाश दर्शन किया। जिनमे डॉ राजेश्वर मित्र (कुरुक्षेत्र, हरियाणा), प्रो० मनोज मिश्र (गंगानाथ झा शोध संस्थान, प्रयागराज), प्रो प्रयाग नारायण मिश्र (प्रयाग विश्वविद्यालय), डॉ अमलधारी सिंह (काशी), डॉ सुखराम (दिल्ली विश्वविद्यालय), डॉ अम्बरीश मिश्र (बिहार), डॉ ईशा नारायण दिवेदी (फतेहपुर), डॉ नितिन आर्य (सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय), वेदविद्या प्रतिष्ठान उज्जैन से प्रशासनिक अधिकारी, कुंजबिहारी पांडेय एवं आकाश मिश्र तथा डीन, फैकल्टी ऑफ आर्ट्स, लखनऊ विश्वविद्यालय ने भी टेलीस्कोप द्वारा सूर्य व चंद्र का आकाश दर्शन किया।